मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रा. लि.
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर फो. न. (02482) -220667

## पिक:- टिंडा (ढेमसे)

**वाण :- अर्का टिंडा, महिमा, मुग्धा**

**हवामान :- या पिकास उष्ण हवामान मानवते. कमी तापमान आणि जास्त आर्द्रता असल्यास पिकाची वाढ चांगली होत नाही. रोग व किडींचे प्रमाण वाढते. भरपूर सूर्यप्रकाश या पिकाला चांगला मानवतो. अती उष्ण किंवा दमट हवामान या पीकास मानवत नाहि. यासाठी कोरडे हवामान या पिकास चांगला प्रतिसाद देते.**

**जमीन निवड व जमिनीची मशागत :- या पिकास हलकी ते मध्यम आणि उत्तम निचऱ्याची जमीन लागते. हलक्या जमिनीत हे पीक लवकर तयार होते. तीन ते चार पाळ्या वखराच्या घेऊन जमीन भुसभुशीत करावी, 15-20 गाड्या कुजलेले शेणखत टाकून शेवटी वखराची पाळी करावी.**

**बीज प्रक्रिया वेळ/ रासायनिक औषधे :- गाऊचो 10 ग्रॅम/ किलो बियाणास ओलसर करून लावावे व अर्धा ते एक तास सावली मध्ये सुकवुन घ्यावे.**

**पेरणीची वेळ:- खरीप :- जून-जुलै उन्हाळ्यात:- जानेवारी-फेब्रुवारी.**

**पेरणीसाठी लागणारे बियाणे-पेरणीची पद्धत-दोन ओळीतील अंतर**
**बियाणे :- एक हेक्टर लागवडीसाठी ढेमशाचे 2.5 ते 3 किलो बियाणे लागते.**
**पेरणीची पद्धत :- लागवड करताना दोन ओळींत 120-150 सें. मी. आणि दोन वेलींत 60 सें. मी. अंतर ठेवून करावी.**

**खते व्यवस्थापन :-**

| क्र. | रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर | नत्रजन (कि. ग्रॅ.) | फास्फोरस (कि. ग्रॅ.) | पोटाश (कि. ग्रॅ.) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | जमीन तयार करते वेळी | 34 | 40 | 40 |
| 2 | लागवडी नंतर 25-30 दिवसांनी | 33 | 00 | 00 |
| 3 | पीक फुलोऱ्यात असतांना | 33 | 00 | 00 |
| | कुल | 100 | 40 | 40 |

**रोग व कीड नियंत्रण**
**खतासोबत फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.**

| अ. क्र. | रोग/ कीड | औषधाचे नाव | मात्रा प्रति लि पाण्यात |
|---|---|---|---|
| 1 | भुरी | सल्फर | 02 ग्रॅ. प्रति लि. |
| 2 | पानावरील ठिपके | डायथेन एम-45 | 02 ग्रॅ. प्रति लि. |
| 3 | रस शोषक किडी | कॉन्फिडॉर | 04 मि.ली प्रति 10 लि |

**तन व्यवस्थपन:- दोन ते तीन निंदणी करावी डिम उघडे होण्यासाठी वेली खाली वारंवार खुरपणी करावी. लागण झालेली फळे आणि सुखलेली पाने गोळा करून खोल खड्यात टाका.**

**पाणी व्यवस्थापन: उन्हाळ्यात ६ ते ७ दिवसाच्या अंतराने सकाळी ९ चे आत पाणी द्यावे. थंडीत ८ ते १० दिवसांच्या अंतराने सकाळी १० ते दुपारी ३ ह्या वेळेत पाणी द्यावे. पाणी देताना भीज पाणी (संपुर्ण पाणी देणे) न देता, टेक पाणी (हलकेसे पाणी देणे) द्यावे. माल लागल्यावर मात्र (तोडे चालू असताना) पाण्याच्या पाळ्या लवकर द्याव्यात.**

**पीक काढणीचा तपशील :- ढेमशाची तोडणी फळे कोवळी असतानाच करावी. फळे मोठी झाल्यास टणक आणि तंतुमय होतात. अशी फळे भाजीसाठी उपयुक्त राहात नाहीत. फळे काढताना साल नखाने दाबून पाहावी. फळधारणेपासून साधारणपणे 7 ते 10 दिवसांच्या अंतराने फळे काढावीत. फळे काढल्यानंतर रोगट व किडकी फळे बाजूला काढून चांगली फळे व्यवस्थित पॅकिंग करून विक्रीसाठी पाठवावीत.**

**टीप: वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधण केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भोगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणामुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.**

मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रा. लि.
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर मो. न. 9405782668

# टिंडा/दिलपसंद

**किस्में :- अर्का टिंडा, महिमा, मुग्धा**

**उपयुक्त जलवायु: टिंडे की खेती गर्म और शुष्क जलवायु में की जाती है. बीजों के अंकुरण के लिए करीब 27-30 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान अच्छा माना जाता है.**

**मिट्टी का चयन: इसकी खेती कई प्रकार की भूमि में कर सकते हैं, लेकिन बलुई दोमट या दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है. फसल की अधिक उपज और गुणवत्ता के लिए भूमि का पी.एच.मान 6.0-7.0 के बीच होना चाहिए. टिंडे की खेती नदी तटों की मिट्टी में भी की जा सकती है.**

**खेती की तैयारी: खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए. इसके बाद 3 जुताई देसी हल या कल्टीवेटर से कर दें. अब खेत को समतल बना लें. ध्यान दें कि खेत में पानी कम या अधिक नहीं होना चाहिए.**

**बीज उपचार:- बीजों की बुवाई से पहले गाऊचो 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचार करना चाहिए|**

**बुवाई का समय: फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए बुवाई समय पर करनी चाहिए. बता दें कि देश के उत्तरी मैदानी भागों में इसकी खेती साल में 2 बार होती है. टिंडे की पहली बुवाई फरवरी से अप्रैल में करनी चाहिए. इसकी दूसरी बुवाई जून से जुलाई में होती है.**

**बीज की मात्रा: इस फसल की बुवाई उच्च गुणवत्ता, सुडौल, स्वस्थ और अच्छे बडी से करनी चाहिए. बीज की मात्रा करीब 2.5 से 3 किलो ग्राम पर्याप्त रहती है.**

**बीज की बुआई- तैयार खेत में 1.2 से 1.5 मीटर की दूरी पर 30 से 40 सेंटीमीटर चौड़ी और 15 से 20 सेंटीमीटर गहरी नालियां बना लेते हैं| नालियों के दोनों किनारों पर 45 से 60 सेंटीमीटर की दूरी पर 2 सेंटीमीटर की गहराई पर बीजों की बुवाई करते हैं| अंकुर निकल आने पर आवश्यकतानुसार छंटाई कर दी जाती है|**

**खाद और उर्वरक प्रबन्धन- साधारणतया खेती की तैयारी के समय गोबर की सड़ी खाद 150 से 200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर देना लाभप्रद रहता है|**

| क्र. | रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर | नत्रजन (कि.ग्रा.) | फास्फोरस (कि.ग्रा.) | पोटाश(कि.ग्रा.) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | बुवाई पूर्व | 34 | 40 | 40 |
| 2 | बुवाई के 25 से 30 दिन बाद | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 से 45 दिन पर | 33 | 00 | 00 |
| | कुल | 100 | 40 | 40 |

**रोग व कीट : खाद के साथ फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकडं अथवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकडं इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है.**

| क्र. | रोग/ कीट | नियंत्रण | मात्रा प्रति ली पाणी में |
|---|---|---|---|
| 1 | पत्तों पर सफेद धब्बे | सल्फर | 02 ग्राम प्रति ली |
| 2 | अँन्थ्रॅकनोज | डायथेन एम ४५ | 02 ग्राम. प्रति ली. |
| 3 | रस चुसानेवाले किट | कॉन्फिडॉर | 04 मि.ली प्रति 10 ली |

**सिंचाई और जल प्रबन्धन: ग्रीष्मकालीन फसल के लिए 4 से 7 दिन के अंतराल पर तथा वर्षाकालीन फसल में आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई करनी चाहिए| पुष्पन एवं फलन के समय खेत में उचित नमी जरूरी है| वर्षाकालीन मौसम में जल निकास की उचित व्यवस्था आवश्यक है| पानी के खेत में रुकने से फूल झड़ने लगते हैं और विकसित हो रहे फल पीले होकर गिर जाते हैं|**

**खरपतवार नियंत्रण :- टिंडे की फसल के साथ अनेक खरपतवार उग आते है जो भूमि से नमी, पोषक तत्व, स्थान, धुप आदि के लिए पौधों से प्रतिस्पर्धा करते है जिसके कारण पौधों के विकास, बढ़वार और उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है इनकी रोकथाम के लिए २-३ बार निराई गुड़ाई करके खरपतवार को नष्ट कर देना चाहिए |**

**फलों की तोड़ाई: जब टिंड़े में फल बनने लगे, उसके एक सप्ताह के अंदर तुड़ाई कर देनी चाहिए. इसके पौधे छोटे औऱ कोमल हो जाएं, तब तुड़ाई का उचित समय होता है. पहली तुड़ाई के 4 से 5 दिन के अंतराल पर तुड़ाई करते रहना चाहिए.**

**टिपण्णी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.**

Markfield Hybrid Seeds Pvt. Ltd.
B-3, Additional Industrial Colony, Jalna, Customer Care Mobile No. 9405782668

# Tinda

**Varieties:- Arka Tinda, Mahima, Mugdha**

**Suitable climate; Tinda is cultivated in hot and dry climate. A temperature of about 27-30 degrees centigrade is considered good for germination of seeds.**

**Selection of soil; It can be cultivated in many types of land, but sandy loam or loamy soil is considered good. For higher yield and quality of the crop, the pH value of the land should be between 6.0-7.0. Tinda can also be cultivated in the soil of river banks.**

**Preparation of cultivation: The first plowing of the field should be done with a soil turning plow. After this, do 3 plowings with a local plow or cultivator. Now make the field flat. Note that there should not be less or more water in the field.**

**Seed treatment:- Before sowing the seeds, Gaucho should be treated at the rate of 10 grams per kilogram of seed.**

**Sowing time:- To get more yield from the crop, sowing should be done on time. Please note that in the northern plains of the country, it is cultivated twice a year. The first sowing of Tinda should be done in February to April. Its second sowing is done in June to July.**

**Quantity of seeds:- This crop should be sown with high quality, well-formed, healthy and good seeds. The quantity of seeds is about 2.5 to 3 kg.**

**Sowing of seeds:- In the prepared field, make furrows of 30 to 40 cm wide and 15 to 20 cm deep at a distance of 1.2 to 1.5 meters. Sow seeds at a depth of 2 cm at a distance of 45 to 60 cm on both sides of the furrows. When the sprouts emerge, pruning is done as per need.**

**Manure and Fertilizer Management- Generally, it is beneficial to give 150 to 200 quintals of rotten cow dung per hectare at the time of preparation of the field.**

| Sr No. | Chemical Fertilizer Per Hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Before sowing | 34 | 40 | 40 |
| 2 | 25 to 30 days after sowing | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 to 45 days | 33 | 00 | 00 |
| | Total | 100 | 40 | 40 |

**Disease and Pest Control : Using Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vortico (Syngenta) 2.5 kg per acre along with manure in this proportion gives protection from sucking pests for 21 days.**

| Sr No. | Disease/ Pest | Control | Amount of water per liter |
|---|---|---|---|
| 1 | White spots on leaves | Sulphur | 02 gm per liter |
| 2 | Anthracnose | Dithane M 45 | 02 gm per liter |
| 3 | Sucking insects | Confidor | 04 ml per 10 liters |

**Irrigation and water management: For summer crops, irrigation should be done at an interval of 4 to 7 days and in rainy season crops, irrigation should be done as and when required. Proper moisture is necessary in the field during flowering and fruiting. Proper drainage system is necessary during rainy season. Due to stagnation of water in the field, flowers start falling and the developing fruits turn yellow and fall.**

**Weed control:-: Many weeds grow along with the tinda crop which compete with the plants for moisture, nutrients, space, sunlight etc. from the soil, due to which the development, growth and yield of the plants are adversely affected. To prevent these, weeds should be destroyed by weeding 2-3 times.**

**Picking of Fruits: When the fruits start forming in the Tinda, they should be picked within a week. The right time for picking is when the plants become small and tender. Picking should be done at an interval of 4 to 5 days after the first picking.**

**Note: - All the above information is based on the experiments conducted at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.**

માર્કફિલ્ડ હાઇબ્રિડ સીડ્સ પ્રાઇવેટ લિમિટેડ
બી-૩, વધારાની ઔદ્યોગિક વસાહત, જાલના, કસ્ટમર કેર મોબાઇલ નંબર ૯૪૦૫૭૮૨૬૬૮

# ટીંડા

**જાતો:- અરકા ટીંડા, મહિમા, મુગ્ધા**

**યોગ્ય વાતાવરણ: ટીંડાની ખેતી ગરમ અને સૂકી આબોહવામાં થાય છે. બીજ અંકુરણ માટે લગભગ ૨૭-૩૦ ડિગ્રી સેન્ટીગ્રેડ તાપમાન સારું માનવામાં આવે છે.**

**માટીની પસંદગી: તે ઘણી પ્રકારની જમીનમાં ઉગાડી શકાય છે, પરંતુ રેતાળ લોમ અથવા લોમી જમીન સારી માનવામાં આવે છે. પાકની વધુ ઉપજ અને ગુણવત્તા માટે, જમીનનું pH મૂલ્ય ૬.૦-૭.૦ ની વચ્ચે હોવું જોઈએ. નદી કિનારાની જમીનમાં પણ ટીંડાની ખેતી કરી શકાય છે.**

**ખેતરની તૈયારી: ખેતરની પહેલી ખેડાણ માટી ફેરવતા હળથી કરવી જોઈએ. આ પછી, સ્થાનિક હળ અથવા કલ્ટિવેટરથી ૩ ખેડાણ કરો. હવે ખેતરને સપાટ બનાવો. ધ્યાન રાખો કે ખેતરમાં પાણી ઓછું કે વધુ ન હોવું જોઈએ.**

**બીજ માવજત:- બીજ વાવતા પહેલા, ગૌયોને પ્રતિ કિલોગ્રામ બીજ દીઠ 10 ગ્રામના દરે માવજત કરવી જોઈએ.**

**વાવણીનો સમય:- પાકમાંથી વધુ ઉપજ મેળવવા માટે, વાવણી સમયસર કરવી જોઈએ. કૃપા કરીને નોંધ લો કે દેશના ઉત્તરીય મેદાનોમાં, તેની ખેતી વર્ષમાં બે વાર કરવામાં આવે છે. ટીંડાની પહેલી વાવણી ફેબ્રુઆરીથી એપ્રિલમાં કરવી જોઈએ. તેની બીજી વાવણી જૂનથી જુલાઈમાં કરવામાં આવે છે.**

**બીજનો જથ્થો:- આ પાક ઉચ્ચ ગુણવત્તાવાળા, સારી રીતે રચાયેલા, સ્વસ્થ અને સારા બીજ સાથે વાવવો જોઈએ. બીજનો જથ્થો લગભગ 2.5 થી 3 કિલો છે.**

**બીજ વાવવું:- તૈયાર ખેતરમાં, 1.2 થી 1.5 મીટરના અંતરે 30 થી 40 સેમી પહોળા અને 15 થી 20 સેમી ઊંડા ખાડા બનાવો. ચાસની બંને બાજુ 45 થી 60 સેમીના અંતરે 2 સેમીની ઊંડાઈએ બીજ વાવો. જ્યારે અંકુર ફૂટે છે, ત્યારે જરૂરિયાત મુજબ કાપણી કરવામાં આવે છે.**

**ખાતર અને ખાતર વ્યવસ્થાપન- સામાન્ય રીતે, ખેતર તૈયાર કરતી વખતે પ્રતિ હેક્ટર ૧૫૦ થી ૨૦૦ ક્વિન્ટલ સડેલું ગાયનું છાણ આપવું ફાયદાકારક છે.**

| Sr No. | Chemical Fertilizer Per Hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Before sowing | 34 | 40 | 40 |
| 2 | 25 to 30 days after sowing | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 to 45 days | 33 | 00 | 00 |
| | Total | 100 | 40 | 40 |

**રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ: ફ્યુરેરા (ડુપોન્ડ) ૪ કિલો પ્રતિ એકર અથવા વોર્ટિકો (સિંજેન્ટા) ૨.૫ કિલો પ્રતિ એકર ખાતર આ પ્રમાણમાં વાપરવાથી ૨૧ દિવસ સુધી શોષક જીવાતોથી રક્ષણ મળે છે.**

| Sr No. | Disease/ Pest | Control | Amount of water per liter |
|---|---|---|---|
| 1 | White spots on leaves | Sulphur | 02 gm per liter |
| 2 | Anthracnose | Dithane M 45 | 02 gm per liter |
| 3 | Sucking insects | Confidor | 04 ml per 10 liters |

**સિંચાઈ અને પાણી વ્યવસ્થાપન;ઉનાળાના પાક માટે, ૪ થી ૭ દિવસના અંતરે સિંચાઈ કરવી જોઈએ અને વરસાદી ઋતુના પાકમાં, જરૂર મુજબ સિંચાઈ કરવી જોઈએ. ફૂલ અને ફળ આવતા સમયે ખેતરમાં યોગ્ય ભેજ જરૂરી છે. વરસાદની ઋતુમાં યોગ્ય ડ્રેનેજ વ્યવસ્થા જરૂરી છે. ખેતરમાં પાણી સ્થિર થવાને કારણે, ફૂલો ખરવા લાગે છે અને વિકાસશીલ ફળો પીળા પડી જાય છે અને ખરી પડે છે.**

**નિંદણ નિયંત્રણ:-ટીંડા પાક સાથે ઘણા નીંદણ ઉગે છે જે જમીનમાંથી ભેજ, પોષક તત્વો, જગ્યા, સૂર્યપ્રકાશ વગેરે માટે છોડ સાથે સ્પર્ધા કરે છે, જેના કારણે છોડના વિકાસ, વૃદ્ધિ અને ઉપજ પર પ્રતિકૂળ અસર થાય છે. આને રોકવા માટે, ૨-૩ વખત નીંદણ કાઢીને નીંદણનો નાશ કરવો જોઈએ.**

**ફળોની ચૂંટણી:જ્યારે ટીંડામાં ફળો બનવાનું શરૂ થાય છે, ત્યારે તેમને એક અઠવાડિયાની અંદર ચૂંટવા જોઈએ. ચૂંટવાનો યોગ્ય સમય એ છે કે જ્યારે છોડ નાના અને કોમળ બને છે. પહેલી ચૂંટણી પછી 4 થી 5 દિવસના અંતરાલે ચૂંટણી કરવી જોઈએ.**

**નોંધ: - ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી અલગ અલગ સ્થળોએ અલગ અલગ હવામાન, માટીના પ્રકાર અને ઋતુને કારણે બદલાઈ શકે છે.**

మార్క్‌ఫీల్డ్ హైబ్రిడ్ సీడ్స్ ప్రైవేట్ లిమిటెడ్.
B-3, అదనపు ఇండస్ట్రియల్ కాలనీ, జల్నా, కస్టమర్ కేర్ మొబైల్ నం. 9405782668

# టిండా

రకాలు:- అర్కా టిండా, మహిమా, ముద్గా

తగిన వాతావరణం: టిండాను వేడి మరియు పొడి వాతావరణంలో సాగు చేస్తారు. విత్తనాల అంకురోత్పత్తికి దాదాపు 27-30 డిగ్రీల సెంటీగ్రేడ్ ఉష్ణోగ్రత మంచిదని భావిస్తారు.

నేల ఎంపిక; దీనిని అనేక రకాల భూమిలో సాగు చేయవచ్చు, కానీ ఇసుకతో కూడిన లోమీ లేదా లోమీ నేల మంచిదని భావిస్తారు. పంట యొక్క అధిక దిగుబడి మరియు నాణ్యత కోసం, భూమి యొక్క pH విలువ 6.0-7.0 మధ్య ఉండాలి. టిండాను నది ఒడ్డున ఉన్న నేలలో కూడా సాగు చేయవచ్చు.

సాగు తయారీ: పొలాన్ని మొదటిసారి దున్నడం మట్టిని తిప్పే నాగలితో చేయాలి. దీని తరువాత, స్థానిక నాగలి లేదా కల్టివేటర్‌తో 3 దున్నండి. ఇప్పుడు పొలాన్ని చదును చేయండి. పొలంలో తక్కువ లేదా ఎక్కువ నీరు ఉండకూడదని గమనించండి.

విత్తన శుద్ధి: - విత్తనాలను విత్తే ముందు, కిలోగ్రాము విత్తనానికి 10 గ్రాముల చొప్పున గౌచోను శుద్ధి చేయాలి.

విత్తే సమయం: - పంట నుండి ఎక్కువ దిగుబడి పొందడానికి, విత్తడం సకాలంలో చేయాలి. దేశంలోని ఉత్తర మైదానాలలో, దీనిని సంవత్సరానికి రెండుసార్లు సాగు చేస్తారని దయచేసి గమనించండి. టిండా యొక్క మొదటి విత్తడం ఫిబ్రవరి నుండి ఏప్రిల్ వరకు చేయాలి. దాని రెండవ విత్తడం జూన్ నుండి జూలై వరకు చేయాలి.

విత్తనాల పరిమాణం: - ఈ పంటను అధిక నాణ్యత గల, బాగా ఏర్పడిన, ఆరోగ్యకరమైన మరియు మంచి విత్తనాలతో విత్తాలి. విత్తనాల పరిమాణం సుమారు 2.5 నుండి 3 కిలోలు.

విత్తనాలను విత్తడం: - సిద్ధం చేసిన పొలంలో, 1.2 నుండి 1.5 మీటర్ల దూరంలో 30 నుండి 40 సెం.మీ వెడల్పు మరియు 15 నుండి 20 సెం.మీ లోతులో గట్లు వేయండి. గట్లకు రెండు వైపులా 45 నుండి 60 సెం.మీ దూరంలో 2 సెం.మీ లోతులో విత్తనాలను విత్తండి. మొలకలు ఉద్భవించినప్పుడు, అవసరాన్ని బట్టి కత్తిరింపు జరుగుతుంది.

ఎరువు మరియు ఎరువుల నిర్వహణ- సాధారణంగా, పొలం సిద్ధం చేసే సమయంలో హెక్టారుకు 150 నుండి 200 క్వింటాళ్ల కుళ్ళిన ఆవు పేడను ఇవ్వడం ప్రయోజనకరంగా ఉంటుంది.

| Sr No. | Chemical Fertilizer Per Hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Before sowing | 34 | 40 | 40 |
| 2 | 25 to 30 days after sowing | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 to 45 days | 33 | 00 | 00 |
| | Total | 100 | 40 | 40 |

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ: ఎకరానికి ఫెర్టెరా (డూపాండ్) 4 కిలోలు లేదా ఎర్టికో (సింజెంటా) 2.5 కిలోలు ఎరువుతో పాటు ఈ నిష్పత్తిలో వాడటం 21 రోజుల పాటు పీల్చే తెగుళ్ల నుండి రక్షణ కల్పిస్తుంది.

| Sr No. | Disease/ Pest | Control | Amount of water per liter |
|---|---|---|---|
| 1 | White spots on leaves | Sulphur | 02 gm per liter |
| 2 | Anthracnose | Dithane M 45 | 02 gm per liter |
| 3 | Sucking insects | Confidor | 04 ml per 10 liters |

నీటిపారుదల మరియు నీటి నిర్వహణ: వేసవి పంటలకు, 4 నుండి 7 రోజుల వ్యవధిలో నీటిపారుదల చేయాలి మరియు వర్షాకాల పంటలలో, అవసరమైనప్పుడు నీటిపారుదల చేయాలి. పుష్పించే మరియు ఫలాలు కాసే సమయంలో పొలంలో సరైన తేమ అవసరం. వర్షాకాలంలో సరైన పారుదల వ్యవస్థ అవసరం. పొలంలో నీరు నిలిచిపోవడం వల్ల, పువ్వులు రాలిపోవడం ప్రారంభమవుతుంది మరియు అభివృద్ధి చెందుతున్న పండ్లు పసుపు రంగులోకి మారి రాలిపోతాయి.
కలుపు నియంత్రణ:- తిండా పంటతో పాటు అనేక కలుపు మొక్కలు పెరుగుతాయి, ఇవి నేల నుండి తేమ, పోషకాలు, స్థలం, సూర్యకాంతి మొదలైన వాటి కోసం మొక్కలతో పోటీపడతాయి, దీని కారణంగా మొక్కల అభివృద్ధి, పెరుగుదల మరియు దిగుబడి ప్రతికూలంగా ప్రభావితమవుతాయి. వీటిని నివారించడానికి, కలుపు మొక్కలను 2-3 సార్లు కలుపు తీయడం ద్వారా నాశనం చేయాలి.
పండ్లు కోయడం: టిండాలో పండ్లు ఏర్పడటం ప్రారంభించినప్పుడు, వాటిని ఒక వారంలోపు కోయాలి. కోయడానికి సరైన సమయం మొక్కలు చిన్నగా మరియు లేతగా మారినప్పుడు. మొదటిసారి కోసిన తర్వాత 4 నుండి 5 రోజుల వ్యవధిలో కోయాలి.

గమనిక: - పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాల ఆధారంగా ఉంటుంది. వేర్వేరు ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు సీజన్ కారణంగా పైన పేర్కొన్న సమాచారం మారవచ్చు.

ಮಾರ್ಕ್‌ಫೀಲ್ಡ್ ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಸೀಡ್ಸ್ ಪ್ರೈ. ಲಿಮಿಟೆಡ್.
ಬಿ-3, ಹೆಚ್ಚುವರಿ ಕೈಗಾರಿಕಾ ಕಾಲೋನಿ, ಜಲ್ನಾ, ಕಸ್ಟಮರ್ ಕೇರ್ ಮೊಬೈಲ್ ಸಂಖ್ಯೆ. 9405782668

# ಟಿಂಡಾ

**ವೈವಿಧ್ಯಗಳು:- ಅರ್ಕಾ ಟಿಂಡಾ, ಮಹಿಮಾ, ಮುಗ್ಧಾ**

**ಸೂಕ್ತ ಹವಾಮಾನ: ಟಿಂಡಾವನ್ನು ಬಿಸಿ ಮತ್ತು ಶುಷ್ಕ ವಾತಾವರಣದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಬೀಜಗಳ ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯಲು ಸುಮಾರು 27-30 ಡಿಗ್ರಿ ಸೆಂಟಿಗ್ರೇಡ್ ತಾಪಮಾನವು ಉತ್ತಮವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ.**

**ಮಣ್ಣಿನ ಆಯ್ಕೆ: ಇದನ್ನು ಹಲವು ರೀತಿಯ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಸಬಹುದು, ಆದರೆ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಲೋಮ್ ಅಥವಾ ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣು ಉತ್ತಮವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿ ಮತ್ತು ಬೆಳೆಯ ಗುಣಮಟ್ಟಕ್ಕಾಗಿ, ಭೂಮಿಯ pH ಮೌಲ್ಯವು 6.0-7.0 ರ ನಡುವೆ ಇರಬೇಕು. ಟಿಂಡಾವನ್ನು ನದಿ ದಂಡೆಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿಯೂ ಬೆಳೆಸಬಹುದು.**

**ಕೃಷಿ ತಯಾರಿ: ಲದ ಮೊದಲ ಉಳುಮೆಯನ್ನು ಮಣ್ಣನ್ನು ತಿರುಗಿಸುವ ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಮಾಡಬೇಕು. ಇದರ ನಂತರ, ಸ್ಥಳೀಯ ನೇಗಿಲು ಅಥವಾ ಕೃಷಿಕನೊಂದಿಗೆ 3 ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ. ಈಗ ಹೊಲವನ್ನು ಸಮತಟ್ಟಾಗಿ ಮಾಡಿ. ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಅಥವಾ ಹೆಚ್ಚು ನೀರು ಇರಬಾರದು ಎಂಬುದನ್ನು ಗಮನಿಸಿ.**

**ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ: - ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವ ಮೊದಲು, ಪ್ರತಿ ಕಿಲೋಗ್ರಾಂ ಬೀಜಕ್ಕೆ 10 ಗ್ರಾಂ ದರದಲ್ಲಿ ಗೌಚೊವನ್ನು ಸಂಸ್ಕರಿಸಬೇಕು.**

**ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: - ಬೆಳೆಯಿಂದ ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು, ಸಮಯಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಬೇಕು. ದೇಶದ ಉತ್ತರ ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ, ಇದನ್ನು ವರ್ಷಕ್ಕೆ ಎರಡು ಬಾರಿ ಬೆಳೆಸಲಾಗುತ್ತದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ದಯವಿಟ್ಟು ಗಮನಿಸಿ. ಟಿಂಡಾದ ಮೊದಲ ಬಿತ್ತನೆಯನ್ನು ಫೆಬ್ರವರಿಯಿಂದ ಏಪ್ರಿಲ್ ವರೆಗೆ ಮಾಡಬೇಕು. ಅದರ ಎರಡನೇ ಬಿತ್ತನೆಯನ್ನು ಜೂನ್ ನಿಂದ ಜುಲೈ ವರೆಗೆ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ.**

**ಬೀಜಗಳ ಪ್ರಮಾಣ: - ಈ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಉತ್ತಮ ಗುಣಮಟ್ಟದ, ಉತ್ತಮವಾಗಿ ರೂಪುಗೊಂಡ, ಆರೋಗ್ಯಕರ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ಬೀಜಗಳೊಂದಿಗೆ ಬಿತ್ತಬೇಕು. ಬೀಜಗಳ ಪ್ರಮಾಣ ಸುಮಾರು 2.5 ರಿಂದ 3 ಕೆಜಿ.**

**ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವುದು: - ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿದ ಹೊಲದಲ್ಲಿ, 1.2 ರಿಂದ 1.5 ಮೀಟರ್ ದೂರದಲ್ಲಿ 30 ರಿಂದ 40 ಸೆಂ.ಮೀ ಅಗಲ ಮತ್ತು 15 ರಿಂದ 20 ಸೆಂ.ಮೀ ಆಳದ ತೋಡುಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ. ತೋಡುಗಳ ಎರಡೂ ಬದಿಗಳಲ್ಲಿ 45 ರಿಂದ 60 ಸೆಂ.ಮೀ ದೂರದಲ್ಲಿ 2 ಸೆಂ.ಮೀ ಆಳದಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಿ. ಮೊಳಕೆ ಹೊರಹೊಮ್ಮಿದಾಗ, ಅಗತ್ಯಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ.**

**ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ರಸಗೊಬ್ಬರ ನಿರ್ವಹಣೆ- ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ, ಹೊಲವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 150 ರಿಂದ 200 ಕ್ವಿಂಟಾಲ್ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣಿ ನೀಡುವುದು ಪ್ರಯೋಜನಕಾರಿ.**

| Sr No. | Chemical Fertilizer Per Hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Before sowing | 34 | 40 | 40 |
| 2 | 25 to 30 days after sowing | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 to 45 days | 33 | 00 | 00 |
| | Total | 100 | 40 | 40 |

**ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಎಕರೆಗೆ ಫರ್ಟೆರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) 4 ಕೆಜಿ ಅಥವಾ ವೋರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) 2.5 ಕೆಜಿ ಗೊಬ್ಬರವನ್ನು ಈ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಬಳಸಿ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ನೀಡುತ್ತದೆ.**

| Sr No. | Disease/ Pest | Control | Amount of water per liter |
|---|---|---|---|
| 1 | White spots on leaves | Sulphur | 02 gm per liter |
| 2 | Anthracnose | Dithane M 45 | 02 gm per liter |
| 3 | Sucking insects | Confidor | 04 ml per 10 liters |

**ನೀರಾವರಿ ಮತ್ತು ನೀರಿನ ನಿರ್ವಹಣೆ: ಬೇಸಿಗೆಯ ಬೆಳೆಗಳಿಗೆ, 4 ರಿಂದ 7 ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಬೇಕು ಮತ್ತು ಮಳೆಗಾಲದ ಬೆಳೆಗಳಲ್ಲಿ, ಅಗತ್ಯವಿರುವಂತೆ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಬೇಕು. ಹೂಬಿಡುವ ಮತ್ತು ಹಣ್ಣು ಬಿಡುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾದ ತೇವಾಂಶ ಅಗತ್ಯ. ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾದ ಒಳಚರಂಡಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಅಗತ್ಯ. ಹೊಲದಲ್ಲಿ ನೀರಿನ ನಿಶ್ಚಲತೆಯಿಂದಾಗಿ, ಹೂವುಗಳು ಉದುರಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ ಹಣ್ಣುಗಳು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿ ಉದುರುತ್ತವೆ.**

**ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ:-ತಿಂಡಾ ಬೆಳೆಯ ಜೊತೆಗೆ ಅನೇಕ ಕಳೆಗಳು ಬೆಳೆಯುತ್ತವೆ, ಇದು ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತೇವಾಂಶ, ಪೋಷಕಾಂಶಗಳು, ಸ್ಥಳ, ಸೂರ್ಯನ ಬೆಳಕು ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಗಾಗಿ ಸಸ್ಯಗಳೊಂದಿಗೆ ಸ್ಪರ್ಧಿಸುತ್ತದೆ, ಇದರಿಂದಾಗಿ ಸಸ್ಯಗಳ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಇಳುವರಿಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರತಿಕೂಲ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುತ್ತದೆ. ಇವುಗಳನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟಲು, ಕಳೆಗಳನ್ನು 2-3 ಬಾರಿ ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವ ಮೂಲಕ ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕು.**

**ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಕೀಳುವುದು: ಟಿಂಡಾದಲ್ಲಿ ಹಣ್ಣುಗಳು ರೂಪುಗೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದಾಗ, ಅವುಗಳನ್ನು ಒಂದು ವಾರದೊಳಗೆ ಕೀಳಬೇಕು. ಕೀಳಲು ಸರಿಯಾದ ಸಮಯವೆಂದರೆ ಸಸ್ಯಗಳು ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮತ್ತು ಕೋಮಲವಾದಾಗ. ಮೊದಲ ಕೀಳುವಿಕೆಯ ನಂತರ 4 ರಿಂದ 5 ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ಕೀಳಬೇಕು.**

**ಗಮನಿಸಿ: - ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುವಿನ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.**

মার্কফিল্ড হাইব্রিড ছিডছ্ প্রাইভেট লিমিটেড। লিমিটেড।
বি-৩, অতিৰিক্ত ঔদ্যোগিক কলনী, জালনা, গ্রাহক সেৱা মোবাইল নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

# টিণ্ডা

জাত:- আর্কা টিণ্ডা, মহিমা, মুগ্ধ

উপযুক্ত জলবায়ু: গৰম আৰু শুকান জলবায়ুত টিণ্ডাৰ খেতি কৰা হয়। প্ৰায় ২৭-৩০ ডিগ্ৰী চেণ্টিগ্ৰেড উষ্ণতা বীজৰ অংকুৰণৰ বাবে ভাল বুলি ধৰা হয়।

মাটিৰ নিৰ্বাচন: বহু ধৰণৰ মাটিত ইয়াৰ খেতি কৰিব পাৰি, কিন্তু বালিচহীয়া লোম বা লোমীয়া মাটি ভাল বুলি ধৰা হয়। শস্যৰ অধিক উৎপাদন আৰু গুণগত মানৰ বাবে মাটিৰ পি এইচ মান ৬.০-৭.০ৰ ভিতৰত হ'ব লাগে। নদীৰ পাৰৰ মাটিতো টিণ্ডাৰ খেতি কৰিব পাৰি।

খেতিৰ প্ৰস্তুতি: খেতিপথাৰৰ প্ৰথম হাল বাই মাটি ঘূৰোৱা নাঙলেৰে কৰিব লাগে। ইয়াৰ পিছত স্থানীয় হাল বা খেতিয়কৰ সহায়ত ৩টা হাল বোৱা কৰিব লাগে। এতিয়া পথাৰখন সমতল কৰি লওক। মন কৰিব যে পথাৰত পানী কম বা বেছি হ'ব নালাগে।

বীজ শোধন:- বীজ সিঁচাৰ আগতে গৌচো প্ৰতি কিলোগ্ৰাম বীজত ১০ গ্ৰাম হাৰত শোধন কৰিব লাগে।
বীজ সিঁচাৰ সময়:- শস্যৰ পৰা অধিক উৎপাদন পাবলৈ সময়মতে বীজ সিঁচা কৰিব লাগে। মন কৰিব যে দেশৰ উত্তৰ সমভূমি অঞ্চলত ইয়াৰ খেতি বছৰত দুবাৰকৈ কৰা হয়। ফেব্ৰুৱাৰীৰ পৰা এপ্ৰিল মাহৰ ভিতৰত টিণ্ডাৰ প্ৰথম বীজ সিঁচা। ইয়াৰ দ্বিতীয়টো বীজ জুনৰ পৰা জুলাই মাহত কৰা হয়।

বীজৰ পৰিমাণ:- এই শস্যত উচ্চ মানৰ, সুগঠিত, সুস্থ আৰু ভাল বীজ সিঁচিব লাগে। বীজৰ পৰিমাণ প্ৰায় ২.৫ৰ পৰা ৩ কিলোগ্ৰাম।

বীজ সিঁচা:- প্ৰস্তুত কৰা পথাৰত ১.২ৰ পৰা ১.৫ মিটাৰ দূৰত্বত ৩০ৰ পৰা ৪০ চে.মি. বহল আৰু ১৫ৰ পৰা ২০ চে.মি. খাদবোৰৰ দুয়োফালে ৪৫ৰ পৰা ৬০ চে.মি. দূৰত্বত ২ চে.মি. গভীৰতাত বীজ সিঁচিব লাগে। যেতিয়া গজালি ওলায় তেতিয়া প্ৰয়োজন অনুসৰি ছাঁটনি কৰা হয়।

গোবৰ আৰু সাৰ ব্যৱস্থাপনা- সাধাৰণতে পথাৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ সময়ত প্ৰতি হেক্টৰত ১৫০ৰ পৰা ২০০ কুইণ্টল পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ দিয়াটো উপকাৰী।

| Sr No. | Chemical Fertilizer Per Hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Before sowing | 34 | 40 | 40 |
| 2 | 25 to 30 days after sowing | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 to 45 days | 33 | 00 | 00 |
| | Total | 100 | 40 | 40 |

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ : এই অনুপাতত গোবৰৰ সৈতে প্ৰতি একৰত ৪ কেজিকৈ ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) বা ভৰ্টিকো (চিঞ্জেণ্টা) ২.৫ কিলোগ্ৰাম ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈকে কীট-পতংগ চুহি খোৱাৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

| Sr No. | Disease/ Pest | Control | Amount of water per liter |
|---|---|---|---|
| 1 | White spots on leaves | Sulphur | 02 gm per liter |
| 2 | Anthracnose | Dithane M 45 | 02 gm per liter |
| 3 | Sucking insects | Confidor | 04 ml per 10 liters |

জলসিঞ্চন আৰু পানী ব্যৱস্থাপনা
গ্ৰীষ্মকালীন শস্যৰ বাবে ৪ৰ পৰা ৭ দিনৰ ব্যৱধানত জলসিঞ্চন কৰিব লাগে আৰু বাৰিষাৰ শস্যত প্ৰয়োজন অনুসৰি জলসিঞ্চন কৰিব লাগে। ফুল ফুলা আৰু ফল ধৰাৰ সময়ত পথাৰত উপযুক্ত আৰ্দ্ৰতা প্ৰয়োজন। বাৰিষাৰ সময়ত উপযুক্ত পানী নিষ্কাশন ব্যৱস্থাৰ প্ৰয়োজন। পথাৰত পানী স্থবিৰ হৈ পৰাৰ বাবে ফুল সৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে আৰু বিকাশশীল ফলবোৰ হালধীয়া হৈ সৰি পৰে।

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ:- টিণ্ডা শস্যৰ লগতে বহুতো অপতৃণ গজে যিয়ে মাটিৰ পৰা আৰ্দ্ৰতা, পুষ্টিকৰ উপাদান, স্থান, সূৰ্য্যৰ পোহৰ আদিৰ বাবে উদ্ভিদৰ লগত প্ৰতিযোগিতা কৰে, যাৰ বাবে গছৰ বিকাশ, বৃদ্ধি আৰু উৎপাদনত বিৰূপ প্ৰভাৱ পৰে। এইবোৰ প্ৰতিৰোধৰ বাবে ২-৩ বাৰ অপতৃণ কাটি অপতৃণ নষ্ট কৰিব লাগে।

ফল ছিঙি লোৱা: যেতিয়া টিণ্ডাত ফল গঠন হ'বলৈ আৰম্ভ কৰে তেতিয়া এসপ্তাহৰ ভিতৰত ছিঙিব লাগে। ছিঙিবলৈ উপযুক্ত সময় হ'ল যেতিয়া গছবোৰ সৰু আৰু কোমল হৈ পৰে। প্ৰথম ছিঙাৰ পিছত ৪ৰ পৰা ৫ দিনৰ ব্যৱধানত ছিঙিব লাগে।
বি:দ্ৰ: - ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন বতৰ, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে উপৰোক্ত তথ্য সলনি হ'ব পাৰে।

মার্কফিল্ড হাইব্রিড সিডস প্রাইভেট লিমিটেড
বি-৩, অতিরিক্ত শিল্প কলোনি, জালনা, কাস্টমার কেয়ার মোবাইল নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

# টিন্ডা

**জাত:- আরকা টিন্ডা, মহিমা, মুগ্ধা**

**উপযুক্ত জলবায়ু: টিন্ডা গরম এবং শুষ্ক জলবায়ুতে চাষ করা হয়। বীজ অঙ্কুরোদগমের জন্য প্রায় ২৭-৩০ ডিগ্রি সেন্টিগ্রেড তাপমাত্রা ভালো বলে মনে করা হয়।**

**মাটি নির্বাচন: এটি অনেক ধরণের জমিতে চাষ করা যেতে পারে, তবে বেলে দোআঁশ বা দোআঁশ মাটি ভালো বলে মনে করা হয়। ফসলের উচ্চ ফলন এবং গুণমানের জন্য, জমির pH মান ৬.০-৭.০ এর মধ্যে হওয়া উচিত। নদীর তীরের মাটিতেও টিন্ডা চাষ করা যেতে পারে।**

**চাষের প্রস্তুতি: মাটির প্রথম চাষ মাটি ঘোরানো লাঙ্গল দিয়ে করা উচিত। এর পরে, স্থানীয় লাঙ্গল বা চাষকারী দিয়ে ৩টি চাষ করুন। এখন ক্ষেত সমতল করুন। লক্ষ্য রাখুন যে জমিতে জল কম বা বেশি না থাকে।**

**বীজ শোধন:- বীজ বপনের আগে, প্রতি কেজি বীজে ১০ গ্রাম হারে গাউচো শোধন করতে হবে।**

**বপনের সময়:- ফসল থেকে বেশি ফলন পেতে, সময়মতো বপন করতে হবে। অনুগ্রহ করে মনে রাখবেন যে দেশের উত্তরাঞ্চলীয় সমভূমিতে এটি বছরে দুবার চাষ করা হয়। টিন্ডার প্রথম বপন ফেব্রুয়ারি থেকে এপ্রিল মাসে করা উচিত। এর দ্বিতীয় বপন জুন থেকে জুলাই মাসে করা হয়।**

**বীজের পরিমাণ:- এই ফসলটি উচ্চমানের, সুগঠিত, সুস্থ এবং ভালো বীজ দিয়ে বপন করা উচিত। বীজের পরিমাণ প্রায় ২.৫ থেকে ৩ কেজি।**

**বীজ বপন:- প্রস্তুত জমিতে, ১.২ থেকে ১.৫ মিটার দূরত্বে ৩০ থেকে ৪০ সেমি চওড়া এবং ১৫ থেকে ২০ সেমি গভীর খাঁজ তৈরি করুন। খাঁজের উভয় পাশে ৪৫ থেকে ৬০ সেমি দূরত্বে ২ সেমি গভীরতায় বীজ বপন করুন। অঙ্কুরোদগম হলে, প্রয়োজন অনুসারে ছাঁটাই করা হয়।**

**সার ও সার ব্যবস্থাপনা- সাধারণত, ক্ষেত তৈরির সময় প্রতি হেক্টরে ১৫০ থেকে ২০০ কুইন্টাল পচা গোবর দেওয়া উপকারী।**

| Sr No. | Chemical Fertilizer Per Hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Before sowing | 34 | 40 | 40 |
| 2 | 25 to 30 days after sowing | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 to 45 days | 33 | 00 | 00 |
| | Total | 100 | 40 | 40 |

**রোগ ও পোকামাকড় নিয়ন্ত্রণ: প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা একরে ভোরটিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে এই অনুপাতে ব্যবহার করলে ২১ দিনের জন্য চোষা পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।**

| Sr No. | Disease/ Pest | Control | Amount of water per liter |
|---|---|---|---|
| 1 | White spots on leaves | Sulphur | 02 gm per liter |
| 2 | Anthracnose | Dithane M 45 | 02 gm per liter |
| 3 | Sucking insects | Confidor | 04 ml per 10 liters |

**সেচ ও পানি ব্যবস্থাপনা; গ্রীষ্মকালীন ফসলের জন্য, ৪ থেকে ৭ দিন অন্তর সেচ দিতে হবে এবং বর্ষাকালীন ফসলে, প্রয়োজন অনুসারে সেচ দিতে হবে। ফুল ও ফল ধরার সময় জমিতে সঠিক আর্দ্রতা প্রয়োজন। বর্ষাকালে সঠিক নিষ্কাশন ব্যবস্থা প্রয়োজন। জমিতে পানি জমে থাকার কারণে ফুল ঝরে পড়তে শুরু করে এবং বিকাশমান ফল হলুদ হয়ে ঝরে পড়ে।**

**আগাছা নিয়ন্ত্রণ:-টিন্ডা ফসলের সাথে অনেক আগাছা জন্মায় যা মাটি থেকে আর্দ্রতা, পুষ্টি, স্থান, সূর্যালোক ইত্যাদির জন্য গাছের সাথে প্রতিযোগিতা করে, যার কারণে গাছের বিকাশ, বৃদ্ধি এবং ফলন বিরূপভাবে প্রভাবিত হয়। এগুলো প্রতিরোধ করার জন্য, ২-৩ বার আগাছা পরিষ্কার করে আগাছা ধ্বংস করতে হবে।**

**ফল সংগ্রহ; টিন্ডায় ফল তৈরি শুরু হলে, এক সপ্তাহের মধ্যে ফল সংগ্রহ করা উচিত। গাছপালা ছোট এবং নরম হয়ে গেলেই ফসল সংগ্রহের উপযুক্ত সময়। প্রথম সংগ্রহের ৪ থেকে ৫ দিন অন্তর অন্তর ফসল সংগ্রহ করা উচিত।**

**বিঃদ্রঃ: - উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষা-নিরীক্ষার উপর ভিত্তি করে তৈরি। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন আবহাওয়া, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্য পরিবর্তিত হতে পারে।**

ਮਾਰਕਫੀਲਡ ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਸੀਡਜ਼ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਲਿਮਟਿਡ
ਬੀ-3, ਐਡੀਸ਼ਨਲ ਇੰਡਸਟਰੀਅਲ ਕਲੋਨੀ, ਜਾਲਨਾ, ਕਸਟਮਰ ਕੇਅਰ ਮੋਬਾਈਲ ਨੰਬਰ 9405782668

# ਟਿੰਡਾ

ਕਿਸਮਾਂ:- ਅਰਕਾ ਟਿੰਡਾ, ਮਹਿਮਾ, ਮੁਗਧਾ

ਉਚਿਤ ਜਲਵਾਯੂ; ਟਿੰਡਾ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਗਰਮ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਕ ਜਲਵਾਯੂ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਬੀਜਾਂ ਦੇ ਉਗਣ ਲਈ ਲਗਭਗ 27-30 ਡਿਗਰੀ ਸੈਂਟੀਗਰੇਡ ਦਾ ਤਾਪਮਾਨ ਚੰਗਾ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਚੋਣ: ਇਸਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਕਈ ਕਿਸਮਾਂ ਦੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਰੇਤਲੀ ਦੋਮਟ ਜਾਂ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ ਚੰਗੀ ਮੰਨੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਫਸਲ ਦੀ ਵੱਧ ਪੈਦਾਵਾਰ ਅਤੇ ਗੁਣਵੱਤਾ ਲਈ, ਜ਼ਮੀਨ ਦਾ pH ਮੁੱਲ 6.0-7.0 ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਟਿੰਡਾ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਨਦੀ ਦੇ ਕਿਨਾਰਿਆਂ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਕਾਸ਼ਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ: ਖੇਤ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਵਾਹੀ ਮਿੱਟੀ ਮੋੜਨ ਵਾਲੇ ਹਲ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਸਥਾਨਕ ਹਲ ਜਾਂ ਕਲਟੀਵੇਟਰ ਨਾਲ 3 ਵਾਹੀ ਕਰੋ। ਹੁਣ ਖੇਤ ਨੂੰ ਸਮਤਲ ਬਣਾਓ। ਧਿਆਨ ਦਿਓ ਕਿ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਘੱਟ ਜਾਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪਾਣੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ:- ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਗੌਚੋ ਨੂੰ 10 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਦੀ ਦਰ ਨਾਲ ਉਪਚਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ:- ਫਸਲ ਤੋਂ ਵਧੇਰੇ ਝਾੜ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਬਿਜਾਈ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਧਿਆਨ ਦਿਓ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਉੱਤਰੀ ਮੈਦਾਨੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿੱਚ, ਇਸਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਸਾਲ ਵਿੱਚ ਦੋ ਵਾਰ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਟਿੰਡਾ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਬਿਜਾਈ ਫਰਵਰੀ ਤੋਂ ਅਪ੍ਰੈਲ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਸਦੀ ਦੂਜੀ ਬਿਜਾਈ ਜੂਨ ਤੋਂ ਜੁਲਾਈ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਬੀਜਾਂ ਦੀ ਮਾਤਰਾ:- ਇਸ ਫਸਲ ਨੂੰ ਉੱਚ ਗੁਣਵੱਤਾ ਵਾਲੇ, ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬਣੇ, ਸਿਹਤਮੰਦ ਅਤੇ ਚੰਗੇ ਬੀਜਾਂ ਨਾਲ ਬੀਜਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬੀਜਾਂ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਲਗਭਗ 2.5 ਤੋਂ 3 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਹੈ।

ਬੀਜਾਂ ਦੀ ਬਿਜਾਈ:- ਤਿਆਰ ਕੀਤੇ ਖੇਤ ਵਿੱਚ, 1.2 ਤੋਂ 1.5 ਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ 30 ਤੋਂ 40 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਚੌੜੇ ਅਤੇ 15 ਤੋਂ 20 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਡੂੰਘੇ ਖੁੱਡਾਂ ਬਣਾਓ। ਖੁੱਡਾਂ ਦੇ ਦੋਵੇਂ ਪਾਸੇ 45 ਤੋਂ 60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ 2 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਡੂੰਘਾਈ 'ਤੇ ਬੀਜ ਬੀਜੋ। ਜਦੋਂ ਫੁੱਟ ਨਿਕਲਦੇ ਹਨ, ਤਾਂ ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ ਛਾਂਟੀ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ ਪ੍ਰਬੰਧਨ- ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ, ਖੇਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਸਮੇਂ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 150 ਤੋਂ 200 ਕੁਇੰਟਲ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗਾਂ ਦਾ ਗੋਬਰ ਦੇਣਾ ਲਾਭਦਾਇਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

| Sr No. | Chemical Fertilizer Per Hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Before sowing | 34 | 40 | 40 |
| 2 | 25 to 30 days after sowing | 33 | 00 | 00 |
| 3 | 40 to 45 days | 33 | 00 | 00 |
| | Total | 100 | 40 | 40 |

ਰੋਗ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ: ਫਰਟੇਰਾ (ਡੂਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵੋਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਂਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਇਸ ਅਨੁਪਾਤ ਵਿੱਚ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

| Sr No. | Disease/ Pest | Control | Amount of water per liter |
|---|---|---|---|
| 1 | White spots on leaves | Sulphur | 02 gm per liter |
| 2 | Anthracnose | Dithane M 45 | 02 gm per liter |
| 3 | Sucking insects | Confidor | 04 ml per 10 liters |

ਸਿੰਜਾਈ ਅਤੇ ਪਾਣੀ ਪ੍ਰਬੰਧਨ: ਗਰਮੀਆਂ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਲਈ, 4 ਤੋਂ 7 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਬਰਸਾਤੀ ਮੌਸਮ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਵਿੱਚ, ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ ਸਿੰਚਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਫੁੱਲ ਅਤੇ ਫਲ ਲੱਗਣ ਦੌਰਾਨ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਸਹੀ ਨਮੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਬਰਸਾਤੀ ਮੌਸਮ ਦੌਰਾਨ ਸਹੀ ਨਿਕਾਸੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਰੁਕਣ ਕਾਰਨ, ਫੁੱਲ ਡਿੱਗਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਵਿਕਾਸਸ਼ੀਲ ਫਲ ਪੀਲੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਡਿੱਗ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਨਦੀਨਾਂ ਦਾ ਨਿਯੰਤਰਣ: -ਟਿੰਦਾ ਫਸਲ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਨਦੀਨ ਉੱਗਦੇ ਹਨ ਜੋ ਮਿੱਟੀ ਤੋਂ ਨਮੀ, ਪੌਸ਼ਟਿਕ ਤੱਤਾਂ, ਜਗ੍ਹਾ, ਸੂਰਜ ਦੀ ਰੌਸ਼ਨੀ ਆਦਿ ਲਈ ਪੌਦਿਆਂ ਨਾਲ ਮੁਕਾਬਲਾ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਪੌਦਿਆਂ ਦਾ ਵਿਕਾਸ, ਵਾਧਾ ਅਤੇ ਝਾੜ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ, ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ 2-3 ਵਾਰ ਨਦੀਨਾਂ ਨਾਲ ਨਸ਼ਟ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਫਲਾਂ ਦੀ ਚੁਗਾਈ:ਜਦੋਂ ਟਿੰਡਾ ਵਿੱਚ ਫਲ ਬਣਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇੱਕ ਹਫ਼ਤੇ ਦੇ ਅੰਦਰ-ਅੰਦਰ ਚੁਗਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਚੁਗਾਈ ਦਾ ਸਹੀ ਸਮਾਂ ਉਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਪੌਦੇ ਛੋਟੇ ਅਤੇ ਕੋਮਲ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪਹਿਲੀ ਚੁਗਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ 4 ਤੋਂ 5 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਚੁਗਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਨੋਟ: - ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿੱਚ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮੌਸਮ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਬਦਲ ਸਕਦੀ ਹੈ।